5

घर में मसीही स्त्री

भली पत्नी कौन पा सकता है ? क्योंकि उसका मूल्य मूंगों से भी बहुत अधिक है।

.....

उसके पुत्र उठ-उठ कर उसको धन्य कहते हैं, उसका पति भी उठकर उसकी ऐसी प्रशंसा करता है: बहुत सी स्त्रियों ने अच्छे-अच्छे काम तो किए हैं परन्तु तू उन सभों में श्रेष्ठ है (नीतिवचन 31:10, 28, 29)।

नीतिवचन की पुस्तक में घर में परमेश्वर का भय मानने वाली स्त्री का सुन्दर चित्रण दिया गया है। उसका पति उस पर भरोसा करता है, वह उसके साथ अच्छा व्यहार करती है, और परिवार चलाने में उसकी सहायता करती है। वह इस बात का ध्यान रखती है कि उसके पति और बच्चों की सही देखभाल हो रही है। कारोबार के मामले में वह चतुर है। उसकी करुणा निर्धनों के लिए उमड़ पड़ती है और उनकी सहायता के लिए वह काम करती है। वह बड़ी समझदारी से बात करती है। अपने परिवार के लोगों से दिखाए गए प्रेम के उसके ढंग के कारण वे उसे सराहते और उसकी तारीफ करते हैं। उसके अपने मजदूर उसके गुण गाते हैं (नीतिवचन 31:10-31)। ''शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी'' (नीतिवचन 31:30)।

भली स्त्री समाज में बड़ी मूल्यवान है और घर में भलाई का उसका एक प्रभाव है। ''जिस ने स्त्री ब्याह ली, उसने उत्तम पदार्थ पाया, और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है'' (नीतिवचन 18:22)। ''अनुग्रह करने वाली स्त्री प्रतिष्ठा नहीं खोती है'' (नीतिवचन 11:16क)। ''घर और धन पुरखाओं के भाग में, परन्तु बुद्धिमती पत्नी यहोवा ही से मिलती है'' (नीतिवचन 19:14)।

स्त्रियां कई आदमियों और कई परिवारों की मज़बूती या पतन का कारण रही हैं। हम पढ़ते हैं, ''भली स्त्री अपने पति का मुकुट है, परन्तु जो लज्जा के काम करती, वह मानो उसकी हड्डियों के सड़ने का कारण होती है'' (नीतिवचन 12:4); ''हर बुद्धिमान स्त्री अपने घर को बनाती है, पर मूढ़ स्त्री उसको अपने ही हाथों से ढहा देती है'' (नीतिवचन 14:1)।

मां के रूप में

घर में पत्नी के प्रभाव को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। उसके जीवन का परिवार पर गहरा प्रभाव होता है; क्योंकि आमतौर पर वह बच्चों के साथ अधिक समय बिताती है। बच्चे जिस दिशा में जाते हैं, उससे आमतौर पर मां के जीवन का प्रभाव ही मिलता है।

बच्चों को सिखाने की पिताओं को विशेष सलाह दी गई है। पौलुस ने लिखा, ''और हे बच्चे वालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चितावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण करो'' (इफिसियों 6:4)। इससे यह लग सकता है कि स्त्रियां स्वाभाविक रूप से अपने बच्चों को निर्देश देती हैं, जबकि पुरुष कई बार इस कर्त्तव्य को नज़रअंदाज़ करते हैं। परन्तु मुख्य ज़िम्मेदारी पिता के कन्धों पर ही है। एली का दोषी ठहराया जाना एक उदाहरण के रूप में देखा जाता है, कि उसने अपने लड़कों को सुधारा नहीं (1 शमूएल 2:29, 30; 3:13, 14)। अब्राहम को आशीष देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा इस शर्त से जुड़ी हुई थी कि अब्राहम अपने बच्चों को और अपने घराने को परमेश्वर का मार्ग सिखाएगा (उत्पत्ति 18:19)।

बेशक, घर में बच्चों की सिखलाई की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी माताओं की है। यरूशलेम में पीछे रह जाने के लिए यीशु को यूसुफ ने नहीं, मरियम ने डांटा था: ''हे पुत्र, तू ने हम से क्यों ऐसा व्यवहार किया? देख, तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे'' (लूका 2:48ख)। पौलुस ने उनकी बात की, जिनके प्रभाव से तीमुथियुस विश्वासी हुआ था: ''और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहिले तेरी नानी लोईस, और तेरी माता यूनीके में था, और मुझे निश्चय हुआ है, कि तुझ में भी है'' (2 तीमुथियुस 1:5)। महान स्त्रियों ने बच्चों का पालन-पोषण अलग तरह से किया।

बच्चों के लिए अपने माता-पिता की आज्ञा मानना आवश्यक है। इस्राएल के साथ बान्धी गई वाचा में परमेश्वर ने बच्चों को अपने माता और पिता का आदर करने का निर्देश दिया था (निर्गमन 20:12; व्यवस्थाविवरण 5:16)। पुत्र को सुलैमान ने यह सलाह दी:

> हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा, और अपनी माता की शिक्षा को न तज (नीतिवचन 1:8; 6:20)
>
> अपने जन्माने वाले की सुनना, और जब तेरी माता बुढ़िया हो जाए, तब भी उसे तुच्छ न जानना (नीतिवचन 23:22)।
>
> धर्मी का पिता बहुत मगन होता है; और बुद्धिमान का जन्माने वाला उसके कारण आनन्दित होता है। तेरे कारण माता-पिता आनन्दित और तेरी जननी मगन होए (नीतिवचन 23:24, 25)।

नये नियम ने इस विषय को आगे बढ़ाया है। पौलुस ने बच्चों को यह निर्देश देने के बाद कि ''हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि उचित है'' (इफिसियों 6:1) वाचा से उद्धृत करते हुए उन्हें अपने माता-पिता का आदर करने को कहा (इफिसियों 6:2)। उसने यह भी कहा, ''हे बालको, सब बातों में अपने-अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता है'' (कुलुस्सियों 3:20)। ''माता-पिता'' शब्दों में पिता और माता दोनों ही आते हैं, इसलिए बच्चों को पिता के साथ-साथ माता की

आज्ञा मानने का भी आदेश है। माताएं और पिता दोनों पर बच्चों को समझाने की ज़िम्मेदारी होती है। अपनी माताओं की आज्ञा न मानने वाले बच्चे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं।

पौलुस ने दुष्ट अन्यजाति समाज का चित्रण अपने माता-पिता का अपमान करने वाले और अवज्ञाकारी लोगों के रूप में किया, जिसमें माताओं की आज्ञा न मानने वाले भी शामिल होंगे। अपने माता-पिता के साथ ऐसा व्यवहार करने वालों का नाम उन लोगों में दिया गया है, जो हत्या करते, घृणा करते और निर्बुद्धि हैं (रोमियों 1:28-31), और उनमें वे भी हैं, जो स्वार्थी, क्रूर, भलाई के वैरी और विश्वासघाती हैं (2 तीमुथियुस 3:2-4)। कइयों को तो अपने पिताओं और माताओं की हत्या करने वाले भी कहा गया है (1 तीमुथियुस 1:9)।

मूसा की व्यवस्था के अधीन अपने पिता या माता का अपमान करने वाले बच्चों को कठोर दण्ड रखा गया था। लैव्यव्यवस्था 20:9 कहता है, "जो अपने पिता या माता को शाप दे वह निश्चय मार डाला जाए; उस ने अपने पिता या माता को शाप दिया है, इस कारण उसका खून उसी के सिर पर पड़ेगा।" (व्यवस्थाविवरण 22:18-21 भी देखें।)

साधारणतया माताओं और स्त्रियों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाना चाहिए। पौलुस ने तीमुथियुस को बूढ़ी स्त्री का वैसे ही सम्मान करने के लिए कहा, जैसे वह अपनी मां करता था और जवान स्त्रियों को शुद्ध मन से उन्हें बहन जान कर सम्मान दिया जाना चाहिए (1 तीमुथियुस 5:2)। इससे स्त्रियों के प्रति पौलुस के व्यवहार और उस सम्मान का पता चलता है, जो माताओं और सब स्त्रियों को दिया जाना आवश्यक है। नया नियम स्त्रियों को जिनका जीवन यीशु के लिए बीता हो, अत्यधिक सम्मान के योग्य बताता है।

पत्नी के रूप में

बूढ़ी स्त्रियों द्वारा जवान महिलाओं को दिए जाने वाले निर्देशों से घर में पत्नी की महत्वपूर्ण भूमिका का पता चलता है:

> इसी प्रकार बूढ़ी स्त्रियों का चाल-चलन पवित्र लोगों सा हो, ... अच्छी बातें सिखाने वाली हों, ताकि वे जवान स्त्रियों को चितौनी देती रहें, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करने वाली, भली और अपने-अपने पति के आधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए (तीतुस 2:3-5)।

इन निर्देशों से संकेत मिलता है कि जवान पत्नियों को घर में अच्छी माताएं बनना आवश्यक है। उन्हें पति से प्रेम करने वाली (यू.: *philandrous*) और बच्चों से प्रेम करने वाली (यू.: *philoteknous*) होना चाहिए। अपने पतियों और बच्चों के लिए, जो प्रेम उन्हें रखना है, उसे *agape* "प्रेम" के रूप में नहीं, बल्कि *phile* "प्रेम" के रूप में बताया गया है। इस शब्द का इस्तेमाल स्त्री के अपने पति और बच्चों के लिए होने वाले भावनात्मक

मित्रतापूर्वक लगाव को व्यक्त करने के लिए किया गया हो सकता है। ऐसा प्रेम स्पष्ट रूप में सिखाया और पकड़ा जा सकता है।

पत्नियों को *oikourous* मूलत: ''घर का काम करने वाली'' होने की भी आज्ञा दी गई है, जो नये नियम में केवल तीतुस 2:5 में मिलने वाला शब्द है। पतियों के विपरीत स्त्रियों के लिए यह बात जिन्हें अपने परिवारों का समर्थन करने की ज़िम्मेदारी है, यह है कि वे घर की देखभाल करें। यह रोक कहां तक है, यह इस आयत में नहीं बताया गया; परन्तु आदर्श स्त्री का विवरण संकेत देता है कि उसका कार्य घर तक सीमित नहीं था (नीतिवचन 31:14, 16, 24)। प्रेरितों 18:18 में प्रिसकिल्ला की यात्राएं और गतिविधियां भी इस बात का संकेत हैं कि स्त्रियां केवल घर तक ही सीमित नहीं थीं।

सारांश

घर में मसीही स्त्री के महत्व पर अत्यधिक बल नहीं दिया जा सकता। वह एक स्त्री का स्पर्श देती है, जो पुरुष नहीं दे सकता। उसकी कोमल देखभाल, उसका समझने का ढंग, उसका स्नेहपूर्वक लगाव और उसका कोमल मन, उन सब बातों को जोड़ देता है, जिसे कोई और नहीं दे सकता। शक्ति और प्रोत्साहन के लिए, सलाह और सहायता के लिए और उन सभी छोटी-छोटी बातों के लिए जिन्हें पुरुष कई बार नज़रअंदाज़ कर देता है, बच्चे उसी की ओर देखते हैं। सबसे बढ़कर वह अपने बच्चों को परमेश्वर का, अपने पिता का और बड़ों का आदर करना सिखाती है। बच्चे केवल उसकी बातों से ही नहीं, बल्कि उसके उठने बैठने, उसके व्यवहार और कामों से भी सीखते हैं। सावधानीपूर्वक परमेश्वर की सेवा के द्वारा घर की स्त्री परमेश्वर के साथ-साथ पति और बच्चों से भी तारीफ़ पाएगी।

विधवाओं की देखभाल

नये नियम की शिक्षाओं से पता चलता है कि मसीही लोगों के लिए कुछ मामलों में की गई अपेक्षा से बढ़कर स्त्रियों की देखभाल करना अधिक आवश्यक है। विधवाओं की देखभाल का उल्लेख नही है, पर विधवाओं के लिए प्रबन्ध आरम्भिक कलीसिया की मुख्य चिन्ता थी। प्रेरितों 6:1-3 में हम पढ़ते हैं:

> उन दिनों जब चेले बहुत होते जाते थे, तो यूनानी भाषा बोलने वाले इब्रानियों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती। तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, ... हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। (देखें 1 तीमुथियुस 5:3, 16; याकूब 1:27.)

कलीसिया द्वारा सहायता किए जाने के योग्य स्त्री का विवरण मसीह के प्रति बड़े

समर्पण और श्रद्धा वाली स्त्री के रूप में किया गया है। ''वह परमेश्वर पर आशा रखती है, और रात-दिन विनती और प्रार्थना में लौलीन रहती है'' (1 तीमुथियुस 5:5)। एक बुज़ुर्ग विधवा की सहायता की जानी चाहिए, यदि वह नीचे दी गई शर्तों को पूरा करती है:

> ... जो साठ वर्ष से कम की न हो, और एक ही पति की पत्नी रही हो। और भले काम में सुनाम रही हो, जिस ने बच्चों का पालन-पोषण किया हो; पाहुनों की सेवा की हो, पवित्र लोगों के पांव धोए हों, दुखियों की सहायता की हो, और हर एक भले काम में मन लगाया हो (1 तीमुथियुस 5:9, 10)।

ऐसे स्वभाव वाली स्त्रियां किसी भी समाज में आदर्श और अतिसम्मानीय होनी चाहिए। ऐसी स्त्रियां यीशु की शिक्षा का परिणाम हैं, जिसने समाज में स्त्रियों का सम्मान ही नहीं बढ़ाया, बल्कि स्त्रियों को अन्य किसी भी शिक्षा की तुलना में कहीं अधिक भले आत्मिक गुणों से सुशोभित किया है।